दमयन्ती

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
समन्वयक
वैदिक हैरिटेज एवं पाण्डुलिपि शोध संस्थान
राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर

दमयन्ती विदर्भ देश के राजा भीमसेन की पुत्री थी। वह बड़ी रूपवती और विद्यावती थी। उसके गुण और सौंदर्य की प्रशंसा सारे भारतवर्ष में फैली हुई थी। उसी समय निषध देश के राजकुमार नल के गुण और वीरता की चर्चा चारों ओर चल रही थी। नल और दमयन्ती ने एक दूसरे की प्रशंसा सुनी और उनमें प्रेम हो गया। कुछ समय बाद जब स्वयंवर हुआ तब दमयन्ती ने नल के गले में जयमाल पहना दी। दोनों का विवाह हुआ और सुख से दिन बीतने लगे। लेकिन नल के अनेक गुणों के साथ-साथ उसमें जुआ खेलने का दुर्गुण भी बहुत बड़ा था।

नुए का शौक होने पर भी नल उस विद्या में बहुत चतुर नहीं था। उसके पुष्कर नाम के महाभूर्त जुम्राडी भाई ने छल करके जुए में उसका सब राजपाट जीत लिया। नल व्यपनी स्त्री को लेकर घर से बाहर निकला। उसने दमयन्ती से बहुत कहा- "तू अपने पिता के घर चली जा।" लेकिन दमयन्ती ने दुःख में पति का साथ छोड़ना स्वीकार नहीं किया। बह भयानक जङ्गलों में उसके साथ-साथ घूमती रही।

नल दुःख में अपनी बी का कष्ट देखकर और भी घबराता था। उसने सोचा- यदि में दमयन्ती को छोड़कर चला जाऊँ तो लाचार होकर वह अपने पिता के घर चली जायगी। इस विचार से एक रात को जब दमयन्ती सो रही थी, नल उसको छोड़कर चला गया। यह कह देना आवश्यक है कि दमयन्ती ने घर छोड़ते समय अपने दो बच्चों को अपने पिता के घर भिजवा दिया। सबेरे जब दमयन्ती सोकर उठी तब नल को न पाकर वह बेहोश हो गई। जब होश हुच्चा तब व्याकुल होकर रोने-कलपने लगी। अपने प्राणपति का नाम 'लेकर वह बन-बन भटकती फिरती थी।

इस प्रकार जब वह अकेली रो-रोकर कलप रही थी, एक अजगर ने आकर उसको घेर लिया। दमयन्ती व्याकुल होकर और भी जोर से रोने लगी। उसका रोना सुनकर एक बधिक आया जिसने अजगर को मारकर दमयन्ती के प्राण बचाये। बधिक दमयन्ती का सुन्दर रूप देखकर मोहित हो गया। और सन, में। उसके साथ दुद्व्यवहार करने की अभिलाषा करने लगा।

दमयन्ती अब बिलकुल घबराकर परम-पित्ता जगदीश्वर को पुकारने लगी। बधिक ने दमयन्ती को मारने के लिये बाण चलाया। लेकिन ईश्वर की महिमा धन्य है! जिस बाण से पापी व्याघ्र पतिव्रता दमयन्ती को मारना चाहता था वह बाण उसी को जा लगा, और देखते-देखते व्याघ्र के प्राण निकल गये। ऐसे ही और बहुत से सङ्कटों को झेलती हुई दमयन्ती सुबाहु नगर के राजा के यहाँ गई और रानी की दासी बनकर रहने लगी। ज जब, दमयन्ती के पिता ने यहः समाचार सुन। तब उसको अपने घर बुला लिया। इषरु नहीं दमयन्ती को छोड़कर धूमता भटकता अयोध्या में पहुँचा और वहाँ के राजा के यहाँ सास्थी का काम करने लगा।

कुछ दिन पिता के यहाँ रहने के बाद दमयन्ती ने सोचा कि किसी प्रकार नल का पता लगाना चाहिये। इस विचार से देश-देश में दूत भेजे गये। जो दूत अयोध्या गया था उसने लौटकर अयोध्या नरेश के सारथी के गुणों का वर्णन किया। वर्णन से दमयन्ती को मालूम हो गया कि वह सारथी उसके स्वामी राजा नल के सिवाय दूसरा कोई नहीं हो सकता।

नन्न के बुलाने का उसने अच्छा उपाय सोचा। दमयन्ती ने अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के पास दूत भेजकर कहल-वाया- "अब राजा नल का कुछ पता नहीं है। इसलिये मैं पुनर्विवाह के लिये स्वयंवर करना चाहती हूँ। आप कल सबेरे विदर्भ में पहुँच जाइये।" दमयन्ती को पूरा विश्वास था कि सिवाय नल के दूसरा कोई ऐसा रथ नहीं हाँक सकता कि इतनी जल्दी अयोध्या से विदर्भ में पहुँच जाय। जब अयोध्या के राजा नियत समय पर विदर्भ पहुँच गये तब दमयन्ती को एक प्रकार से निश्चय हो गया कि राजा नल ही अयोध्या नरेश का सारथी बना हुआ है।

दमयन्ती के स्वयंवर की बात सुनकर नल को बहुत दुःख हुआ। यद्यपि दमयन्ती को यह मालूम हो गया था कि उसका स्वामी ही अयोध्या नरेश का सारथी बना हुआ है तथापि इस बात को दृढ़ करने के लिए वह और पता लगाने लगी। दमयन्ती ने पता लगाने के लिये कई बार दूत भेजा लेकिन नल ने अपने असली स्वरूप का पता नहीं लगने दिया। अन्त में दमयन्ती ने अपने दोनों बच्चों के साथ दासी को भेजा। बच्चों को देखकर नल के आँसू न रुक सके। वह दासी से कहने लगा- "तू इन बच्चों को लेजा। मेरे भी ऐसे ही बच्चे हैं। इनको देखकर मुझे उनकी याद आती है। याज तक ये नल के हैं। कल से किसी और के हो जायेंगे।"

यत्र दमयन्ती को कुछ भी सन्देह नहीं रह गया। वह स्वयं नल के पास गई और उनके चरणों पर गिर कर कहने लगी "नाथ ! तुम्हार। पता लगाने ही के लिये यह स्वयंवर रचा गया था।" अयोध्या के राजा को जब यह बात मालूम हुई तत्र उन्होंने नल का बड़ा सम्मान किया। अयोध्या में दमयन्ती के साथ आकर नल ने अपना राजपाट सब जीत लिया। तब से नल और दमयन्ती सुग्ख से रहने लगे, क्योंकि उस दिन से नल ने फिर जुए का नाम नहीं लिया।